



1 形似音异



2 音同字异

刘配书  
高玉林  
编著

学生必备工具·文字工作参考  
本手册收录国人容易弄错的成语  
1146条，错例1922条。

# 成语

# 纠错手册

凤凰出版传媒集团  
凤凰出版社

4 形异字同



形异音同 3



**图书在版编目 (C I P) 数据**

成语纠错手册 / 刘配书, 高玉林著. -- 南京 : 凤凰出版社, 2011. 6

ISBN 978-7-5506-0510-7

I. ①成… II. ①刘… ②高… III. ①汉语 - 成语 - 手册 IV. ①H136.3-62

中国版本图书馆 CIP 数据核字(2011)第 070486 号

**书 名** 成语纠错手册

**编 著** 刘配书 高玉林

**选题策划** 北京时代华语图书股份有限公司

**责任编辑** 李相东

**出版发行** 凤凰出版传媒集团

凤凰出版社(原江苏古籍出版社)

南京市中央路 165 号 邮编 210009

发行部电话 025-83223462

**集团网址** 凤凰出版传媒网 <http://www.ppm.cn>

**印 刷** 北京博图彩色印刷有限公司

北京市石景山区黄庄村 43 号 邮编: 100039

**开 本** 690×980 毫米 1/16

**印 张** 39.75

**版 次** 2011 年 6 月第 1 版, 2011 年 7 月第 1 次印刷

**标准书号** ISBN 978-7-5506-0510-7

**定 价** 58.00 元

(本书凡印装错误可向承印厂调换, 电话: 010-83670220)

# 序

刘先生配书，自喻“字虫”，文人，“咬文嚼字”近五十年之专家，著述颇丰，成果斐然。高君玉林，辽宁装备制造职业技术学院社会科学系副教授，从事语言文字应用研究和秘书实务研究。吾与刘先生神交久矣。机缘巧合，相逢于庚寅年“梅花吐幽香”之时，一杯清茶，几多书稿，诵明月之诗，歌窈窕之章。承蒙刘先生信任，遵其意而先睹《成语纠错手册》为快。阅之，不觉春风扑面，喜洋洋也。

汉语工具书甚多，实用、便捷、权威之精品较少。《说文解字》、《康熙字典》、《词源》、《辞海》、《现代汉语词典》、《新华字典》等当属精品之中的精品。会用、用好工具书，实乃文人雅士读书、作文之必需。但世事纷杂，竞争激烈，读书以及写文章者，往往无暇及时“请教”、“活用”案几“圣贤”之宝典，才思泉涌之际，欣然神来之笔，天马行空，于“字形”、“字音”、“字义”之间，难免拾人涕唾，以讹传讹，略输文采，留下几许“瑕疵”，竟成憾事。比如，鄙人前些天拜读某君大作，发现其竟将“风马牛不相及”写成“疯马牛不相及”，把“阮囊羞涩，行止两难”写成“软郎羞涩，行知两难”。笑兮？哭兮？怪哉？叹哉？而刘配书、高玉林先生的《成语纠错手册》，拾遗补阙，扬长避短，弥补以往有关工具书之不足，采用“正”“误”成语之实例、借用“错例”、再逐一“辨析”的体系，于细微处“纠错”，正本清源，具有特别的开创性，为广大汉语文爱好者查检、使用成语之“正误”提供了方便，实乃学生之师，文友之友，办公室案头之必备也。

通览《成语纠错手册》后，发现其特点至少有四：

首先，编撰体例，遵循“通则”。该手册与现行通用的《新华字典》、《现代汉语词典》体例大致相似，便于使用者查验、借鉴。以汉语拼音音节索引

为序，始于“A”，终于“Z”，每一部分又“按例字读音去查同音的字”，无论您是饱学之士，还是孺子开蒙，只需按“音序”检索，即可“观其文、探其究、知其味、得其真”。如，“A”部，凡15例，从“唉声叹气”到“黯然失色”，“正”与“误”上下排列，个中“细微”、“同”与“异”，纷呈页面，览而观之，自可避“假”而循“真”。

其次，紧紧抓住汉字“形、音、义”特点，去伪存真，指点迷津。以该书的重点部分“辨析”为例，从所举成语的“本义”、“引申义”开始逐一简要注释，再对“出错”的原因，从细微处入手进行具体分析，研究并解决了“使用成语何以出错”的问题：

形似，音异。如：“敝帚自珍”，正确；写成“弊帚自珍”或者“鄙帚自珍”，虽“形似”，但“字”不一样，读音也不同。其中，“敝”、“弊”的读音是“bì”，而“鄙”的读音是“bǐ”。又，“鸟(wū)合之众”不是“鸟(niǎo)合之众”；“纵横捭阖”不能写成“纵横俾阖”。因为，捭，音bǎi；而俾，音bǐ。这些，便是所谓的“似是而非”，若不仔细“辨析”，一旦用错，岂不惹人笑话？

形异，音同。如：“华而不实”不是“花而不实”；“流芳百世”不是“留芳百世”；“唇枪舌剑”不是“唇枪舌箭”；“生灵涂炭”不是“生灵涂碳”；“不修边幅”不是“不修边福”或“不修边辐”；“趋炎附势”不是“趋炎赴势”，也不是“驱炎附势”。这些，虽一字之错，但所表达的意思，或者完全“走样”，或者根本无法“表情达意”，使成语的那种“简洁”“通用”的“约定俗成”功能丧失殆尽。

音同，字异。如：将“班门弄斧”中的“班”，误用为“扳”或“搬”；将“姹紫嫣红”的“嫣”，错写为“焉”或“妍”；将“不耻下问”中的“耻”改写为“齿”；将“流连忘返”中的“返”写成“反”；将“出其不意”写成“出奇不意”；“初出茅庐”不能写成“初出茅芦”。前者“茅庐”，表示“草房”；后者之“芦”，草名。凡此种种，一字之差，谬之千里。不仅将有关的“字”写错、用错了，而且“词义”也与原本的意思风马牛不相及。

形异，音异。如：“宠辱不惊”不是“庞辱不惊”。宠，音chǒng；庞，音páng。又，“深居简出”不是“身居浅出”；“追根溯(sù)源”不是“追本溯(shù)源”；“相形见绌(chù)”不是“相形见拙(zhuō)”。这些类似的“错例”，基本上将有关成语的本意完全“篡改”，成为汉语“词林怪胎”，使人不知所云。

再次，就“事”论“理”，不唯上，不畏名。书中所举“案例”（“误”之“索引”）全部注明出处，其中的时间、刊号、书名、报名、作者，乃至具体页码，逐一标明，无一遗漏。没有因为其“名”大、“位”高、“威”重、“势”强而闪烁其词。刘先生与高先生联手，算是“嘤其鸣矣，求其友声”，讲究的是成语的正确使用，追求的是纯洁语言环境，热衷的是成语“纠错”，得意的是国学巨人无数，领衔研究、总结并写出本书的竟是当年复旦大学学新闻的刘先生。于是，两位先生撇开了世俗，勇敢地驰骋于成语的广阔天地，“三十年磨一剑”，于人、于名、于利无关。这种坚持不懈、孜孜以求、真做学问的“求实”精神，岂不令人敬佩？

最后，语言通俗易懂，虽不无高深、艰涩之处，但依然可以雅俗共赏。两位先生特别是刘先生三十余年徜徉“书海”“报林”，纵观百家，既是众多作者的忠实读者，也是“别有用心”的有心人。全书“案例”，大多选自1980年以来全国省市级以上报章杂志，是两位先生几十年如一日将所见“瑕疵”记录在案之积累与心得，时间跨度虽长，如今“用来”却不乏新颖、典型，具有较高的参照性。特别是“辨析”部分的语言，和风细雨，侃侃而论，绝无调侃之意，也无强加于人之心。读之，犹如与朋友聊天，同智者交流，向先生讨教，能不赏心悦目、如沐春风？能无豁然洞开、柳暗花明之叹？诚如刘先生配书所喜欢的那首诗：“斗室无端发古香，开编触目尽琳琅。卅年遂得搜罗愿，也似金钱压官囊。”妙哉斯言。是为序。

陈昌财

辛卯年仲春 京城车公庄

#### 陈昌财简介：

陈昌财（1952年1月30日—），误用名陈昌才，教授、作家，男，笔名：dongjiandao、竹林一片等，江苏人。曾任大学文史教师、系主任、学报主编、教育总监、期刊（网站）执行总编、执行校长等，主讲过大学语文、古典文学、基础写作、应用写作、科技写作、思想品德修养、形式逻辑、哲学、政经、中国通史、党建理论等。主要研究方向：教育管理、写作学、古典文学等。迄今公开发表有关学术专著、论文以及诗歌、散文、小说等300余万字，代表作有专著《当代应用文指南》、《科技写作指导》以及学术论文《国学博学活学》、组诗《赠送给文友的120首诗歌》等。

## 凡 例

一、本手册共收录国人容易弄错的成语 1146 条，错例 1922 条。错例主要来源于纸媒（书报刊），少数来源于网媒。

二、个别词条严格来说还不能算成语，只是结构类似于成语。

三、本手册按汉语拼音字母顺序排列。首字同音的词目，按首字笔画多少和起笔笔形一|丿、一顺序排列。

四、每一条成语，先列出正确的词形（标注为“正”），再列出错误的用法（标注为“误”）。然后举出各种错误用法的实例（错例）。有两条以上错例的，标以①②等。最后从形音义几方面进行辨析。有的还举出典籍或名人的规范用例。

五、本手册在词目中不注音，辨析时，为了说明问题，才少量注音。

六、错例中在本条成语以外的错别字，也予以改正，即：在该错别字后用括号括起，标明“应改为某字”。

# 如何使用本书

**汉语拼音字母顺序排列**

| 首字母 | 词语        | 页数 |
|-----|-----------|----|
| A   | 唉声叹气      | 1  |
| A   | 皑皑白雪      | 2  |
| A   | 爱不释手      | 2  |
| A   | 爱屋及乌      | 3  |
| A   | 安邦定国      | 3  |
| A   | 安分守己      | 4  |
| A   | 安民告示      | 4  |
| A   | 按兵不动      | 5  |
| B   | 拔出萝卜带出泥   | 10 |
| B   | 拔刀相助      | 10 |
| B   | 拔山扛鼎      | 11 |
| B   | 跋山涉水      | 12 |
| B   | 白璧微瑕      | 12 |
| B   | 白璧无瑕      | 13 |
| B   | 白驹过隙      | 13 |
| B   | 百步穿杨      | 14 |
| B   | 百尺竿头，更进一步 | 14 |
| B   | 百炼成钢      | 15 |
| B   | 百废俱兴      | 15 |
| B   | 百舸争流      | 16 |
| B   | 百口莫辩      | 16 |
| B   | 百炼成钢      | 17 |
| B   | 百无聊赖      | 17 |
| B   | 百战不殆      | 17 |
| B   | 百折不挠      | 18 |
| B   | 百折千回      | 18 |
| B   | 百闻不如一见    | 19 |
| B   | 百闻不如一见    | 20 |

**正确成语词典**

**正文**

**正误成语对比**

**错例**

**正误成语含义辨析**

**字母索引**

本手册按汉语拼音字母顺序排列。首字同音的词目，按首字笔画多少和起笔笔形——丨ノヽ一顺序排列。

每一条成语，先列出正确的词形（标注为“正”），再列出错误的用法（标注为“误”）。然后举出各种错误用法的实例（错例）。有两条以上错例的，标以①②等。最后从形音义几方面进行辨析。有的还举出典籍或名人的规范用例。

本手册在词目中不注音，辨析时，为了说明问题，才少量注音。

错例中在本条成语以外的错别字，也予以改正，即：在该错别字后用括号括起，标明“应改为某字”。

# 目 录

## A

|      |   |
|------|---|
| 唉声叹气 | 1 |
| 皑皑白雪 | 2 |
| 爱不释手 | 2 |
| 爱屋及乌 | 3 |
| 安邦定国 | 3 |
| 安分守己 | 4 |
| 安民告示 | 4 |
| 按兵不动 | 5 |

|      |   |
|------|---|
| 按部就班 | 5 |
| 按图索骥 | 6 |
| 暗箭难防 | 7 |
| 黯然神伤 | 7 |
| 黯然失色 | 7 |
| 黯然销魂 | 8 |
| 嗷嗷待哺 | 8 |

## B

|           |    |
|-----------|----|
| 拔出萝卜带出泥   | 10 |
| 拔刀相助      | 10 |
| 拔山扛鼎      | 11 |
| 跋山涉水      | 12 |
| 白璧微瑕      | 12 |
| 白璧无瑕      | 13 |
| 白雪皑皑      | 13 |
| 百步穿杨      | 14 |
| 百尺竿头,更进一步 | 14 |
| 百辞莫辩      | 15 |

|      |    |
|------|----|
| 百废俱兴 | 15 |
| 百舸争流 | 16 |
| 百口莫辩 | 16 |
| 百炼成钢 | 17 |
| 百无聊赖 | 17 |
| 百战不殆 | 17 |
| 百折不挠 | 18 |
| 稗官野史 | 18 |
| 班门弄斧 | 19 |
| 斑驳陆离 | 20 |

|      |    |      |    |
|------|----|------|----|
| 坂上走丸 | 20 | 波澜壮阔 | 37 |
| 半壁江山 | 20 | 博大精深 | 38 |
| 半途而废 | 21 | 不辨菽麦 | 38 |
| 暴虎冯河 | 21 | 不耻下问 | 39 |
| 暴戾恣睢 | 22 | 不动声色 | 39 |
| 暴露无遗 | 23 | 不负众望 | 40 |
| 暴殄天物 | 23 | 不共戴天 | 40 |
| 卑躬屈膝 | 24 | 不寒而栗 | 41 |
| 背道而驰 | 24 | 不计名利 | 41 |
| 背井离乡 | 25 | 不计其数 | 42 |
| 本末倒置 | 26 | 不假思索 | 43 |
| 逼上梁山 | 26 | 不骄不躁 | 43 |
| 比比皆是 | 27 | 不近情理 | 44 |
| 必经之路 | 28 | 不近人情 | 44 |
| 毕恭毕敬 | 28 | 不胫而走 | 45 |
| 筚路蓝缕 | 29 | 不可理喻 | 45 |
| 敝帚自珍 | 29 | 不可名状 | 46 |
| 鞭长莫及 | 30 | 不可思议 | 46 |
| 鞭辟入里 | 30 | 不落窠臼 | 47 |
| 变本加厉 | 31 | 不毛之地 | 47 |
| 变幻莫测 | 32 | 不能自拔 | 48 |
| 彪炳史册 | 32 | 不能自己 | 48 |
| 别出心裁 | 33 | 不平则鸣 | 49 |
| 别具匠心 | 33 | 不屈不挠 | 49 |
| 彬彬有礼 | 34 | 不容置疑 | 50 |
| 冰清玉洁 | 34 | 不同凡响 | 51 |
| 兵荒马乱 | 35 | 不为已甚 | 51 |
| 秉公执法 | 35 | 不屑一顾 | 51 |
| 并驾齐驱 | 36 | 不省人事 | 52 |
| 并行不悖 | 36 | 不修边幅 | 52 |
| 病人膏肓 | 36 | 不言而喻 | 53 |

|      |    |
|------|----|
| 不厌其烦 | 53 |
| 不依不饶 | 54 |
| 不翼而飞 | 54 |
| 不在话下 | 55 |
| 不知所措 | 55 |

|      |    |
|------|----|
| 不置可否 | 56 |
| 布衣蔬食 | 56 |
| 步履维艰 | 57 |
| 步入正轨 | 57 |

## C

|             |    |
|-------------|----|
| 财迷心窍        | 58 |
| 惨不忍睹        | 59 |
| 惨绝人寰        | 59 |
| 惨无人道        | 60 |
| 沧海桑田        | 60 |
| 沧海一粟        | 61 |
| 藏污纳垢        | 61 |
| 草菅人命        | 62 |
| 草长莺飞        | 63 |
| 恻隐之心        | 63 |
| 层峦叠嶂        | 64 |
| 插科打诨        | 64 |
| 姹紫嫣红        | 65 |
| 缠绵悱恻        | 65 |
| 长此以往        | 66 |
| 长年累月        | 66 |
| 长盛不衰        | 67 |
| 长叹短吁   长吁短叹 | 67 |
| 沉湎酒色        | 68 |
| 陈词滥调        | 68 |
| 晨钟暮鼓        | 69 |
| 瞠目结舌        | 69 |
| 惩前毖后        | 70 |

|      |    |
|------|----|
| 嗤之以鼻 | 70 |
| 叱咤风云 | 70 |
| 赤膊上阵 | 71 |
| 重蹈覆辙 | 71 |
| 崇山峻岭 | 72 |
| 宠辱不惊 | 73 |
| 抽丝剥茧 | 74 |
| 丑态毕露 | 74 |
| 踌躇满志 | 75 |
| 出尔反尔 | 75 |
| 出类拔萃 | 76 |
| 出谋划策 | 77 |
| 出其不意 | 77 |
| 出奇制胜 | 78 |
| 出人头地 | 78 |
| 出神入化 | 79 |
| 初出茅庐 | 79 |
| 初来乍到 | 80 |
| 初露锋芒 | 80 |
| 除恶务尽 | 81 |
| 川流不息 | 81 |
| 传宗接代 | 82 |
| 吹毛求疵 | 82 |

|      |    |      |    |
|------|----|------|----|
| 垂涎三尺 | 83 | 促膝谈心 | 86 |
| 唇枪舌剑 | 83 | 猝不及防 | 87 |
| 刺刺不休 | 84 | 催人奋进 | 88 |
| 聪明才智 | 85 | 催人泪下 | 88 |
| 从善如登 | 85 | 璀璨夺目 | 89 |
| 粗制滥造 | 86 | 错落有致 | 89 |

## D

|      |     |             |     |
|------|-----|-------------|-----|
| 打抱不平 | 90  | 当务之急        | 102 |
| 大步流星 | 90  | 得陇望蜀        | 102 |
| 大才槃槃 | 91  | 德高望重        | 103 |
| 大材小用 | 91  | 灯火阑珊        | 103 |
| 大放厥词 | 91  | 颠沛流离        | 104 |
| 大快朵颐 | 92  | 颠扑不破        | 104 |
| 大谬不然 | 93  | 雕虫小技        | 105 |
| 大器晚成 | 93  | 吊儿郎当        | 105 |
| 大伤元气 | 94  | 掉头不顾        | 106 |
| 大声疾呼 | 94  | 喋喋不休        | 106 |
| 大是大非 | 95  | 丁是丁，卯是卯     | 107 |
| 大庭广众 | 95  | 鼎鼎大名   大名鼎鼎 | 107 |
| 大有裨益 | 96  | 丢人现眼        | 108 |
| 大张旗鼓 | 96  | 丢三落四        | 108 |
| 待价而沽 | 97  | 东跑西颠        | 109 |
| 戴罪立功 | 97  | 东施效颦        | 109 |
| 丹书铁券 | 98  | 豆蔻年华        | 110 |
| 殚精竭虑 | 99  | 独出机杼        | 110 |
| 淡泊名利 | 100 | 独出心裁        | 111 |
| 淡妆浓抹 | 100 | 独当一面        | 111 |
| 当机立断 | 101 | 独辟蹊径        | 112 |
| 当头一棒 | 101 | 独树一帜        | 112 |

|      |     |         |     |
|------|-----|---------|-----|
| 独行其是 | 113 | 对簿公堂    | 115 |
| 独占鳌头 | 113 | 对牛弹琴    | 116 |
| 妒贤嫉能 | 114 | 多多益善    | 116 |
| 短小精悍 | 114 | 多行不义必自毙 | 117 |
| 断章取义 | 115 |         |     |

## E

|      |     |      |     |
|------|-----|------|-----|
| 阿谀逢迎 | 118 | 饿殍遍野 | 120 |
| 阿谀奉承 | 118 | 耳鬓厮磨 | 121 |
| 额手称庆 | 119 | 耳濡目染 | 121 |
| 扼腕叹息 | 119 | 耳熟能详 | 122 |
| 饿虎扑食 | 120 | 耳提面命 | 122 |

## F

|        |     |      |     |
|--------|-----|------|-----|
| 发愤图强   | 123 | 蜚声遐迩 | 129 |
| 发扬蹈厉   | 123 | 匪夷所思 | 130 |
| 发扬光大   | 124 | 斐然成章 | 131 |
| 翻来覆去   | 124 | 废寝忘食 | 131 |
| 翻天覆地   | 125 | 分道扬镳 | 131 |
| 翻云覆雨   | 125 | 纷至沓来 | 132 |
| 繁文缛节   | 126 | 愤世嫉俗 | 133 |
| 反唇相讥   | 126 | 丰富多彩 | 133 |
| 反其道而行之 | 127 | 风尘仆仆 | 134 |
| 返璞归真   | 127 | 风驰电掣 | 134 |
| 犯而不校   | 128 | 风华正茂 | 135 |
| 防患未然   | 128 | 风靡一时 | 135 |
| 飞扬跋扈   | 128 | 风声鹤唳 | 136 |
| 非分之想   | 129 | 风雨如晦 | 136 |

|      |     |      |     |
|------|-----|------|-----|
| 风姿绰约 | 137 | 俯首帖耳 | 139 |
| 蜂拥而上 | 137 | 釜底抽薪 | 140 |
| 凤毛麟角 | 138 | 负隅顽抗 | 140 |
| 浮想联翩 | 139 | 妇孺皆知 | 141 |
| 俯首称臣 | 139 | 附庸风雅 | 141 |

## G

|             |     |      |     |
|-------------|-----|------|-----|
| 改弦更张        | 142 | 姑息养奸 | 151 |
| 改邪归正        | 142 | 骨鲠在喉 | 152 |
| 甘拜下风        | 143 | 蛊惑人心 | 152 |
| 甘之如饴        | 143 | 固执己见 | 153 |
| 感恩戴德        | 144 | 故技重演 | 153 |
| 刚愎自用        | 144 | 故态复萌 | 154 |
| 高瞻远瞩        | 145 | 顾名思义 | 154 |
| 高枕无忧        | 145 | 瓜熟蒂落 | 155 |
| 格物致知        | 146 | 刮目相看 | 155 |
| 隔三差五        | 146 | 关怀备至 | 156 |
| 隔靴搔痒        | 147 | 官运亨通 | 156 |
| 各抒己见        | 147 | 光阴似箭 | 157 |
| 各行其是        | 147 | 广种薄收 | 157 |
| 工于心计        | 148 | 归心似箭 | 158 |
| 工欲善其事，必先利其器 | 148 | 鬼斧神工 | 158 |
| 功亏一篑        | 149 | 鬼鬼祟祟 | 159 |
| 觥筹交错        | 149 | 鬼蜮伎俩 | 160 |
| 苟延残喘        | 150 | 国计民生 | 160 |
| 呱呱坠地        | 150 | 过江之鲫 | 161 |
| 孤苦伶仃        | 151 | 过犹不及 | 161 |

## H

|      |     |        |     |
|------|-----|--------|-----|
| 海晏河清 | 162 | 胡作非为   | 176 |
| 骇人听闻 | 162 | 虎视眈眈   | 176 |
| 憨态可掬 | 163 | 怙恶不悛   | 177 |
| 含糊其词 | 163 | 花里胡哨   | 178 |
| 含辛茹苦 | 164 | 花拳绣腿   | 178 |
| 汗流浃背 | 164 | 花团锦簇   | 179 |
| 汗马功劳 | 165 | 华而不实   | 179 |
| 汗牛充栋 | 165 | 哗众取宠   | 180 |
| 悍然不顾 | 166 | 化干戈为玉帛 | 180 |
| 蒿目时艰 | 166 | 化险为夷   | 181 |
| 号啕大哭 | 166 | 画龙点睛   | 181 |
| 毫无二致 | 167 | 怀璧其罪   | 182 |
| 豪言壮语 | 167 | 欢欣鼓舞   | 182 |
| 好高骛远 | 168 | 焕然一新   | 182 |
| 河东狮吼 | 168 | 荒无人烟   | 183 |
| 和蔼可亲 | 169 | 皇皇巨著   | 183 |
| 和盘托出 | 170 | 皇天后土   | 184 |
| 和颜悦色 | 170 | 黄粱美梦   | 185 |
| 和衷共济 | 171 | 灰心丧气   | 185 |
| 哄堂大笑 | 171 | 诲人不倦   | 186 |
| 红头涨脸 | 172 | 诲淫诲盗   | 186 |
| 红装素裹 | 173 | 绘声绘色   | 187 |
| 侯门似海 | 173 | 蕙质兰心   | 187 |
| 后事之师 | 174 | 昏天黑地   | 187 |
| 厚颜无耻 | 174 | 魂牵梦萦   | 188 |
| 呼天抢地 | 174 | 火上浇油   | 188 |
| 胡搅蛮缠 | 175 | 火眼金睛   | 189 |
| 胡诌八扯 | 175 | 火中取栗   | 189 |

豁然开朗 ..... 190 |

## J

|           |     |      |     |
|-----------|-----|------|-----|
| 鸡鸣犬吠      | 191 | 见风使舵 | 206 |
| 饥肠辘辘      | 191 | 见危授命 | 206 |
| 积重难返      | 192 | 见贤思齐 | 207 |
| 吉人天相      | 193 | 剑拔弩张 | 207 |
| 吉人自有天相    | 193 | 交相辉映 | 208 |
| 岌岌可危      | 194 | 娇生惯养 | 208 |
| 急不可耐      | 194 | 焦头烂额 | 209 |
| 集思广益      | 195 | 矫揉造作 | 209 |
| 集腋成裘      | 196 | 矫枉过正 | 210 |
| 佶屈聱牙      | 196 | 结结巴巴 | 210 |
| 籍籍无名      | 197 | 接长不短 | 211 |
| 己所不欲,勿施于人 | 197 | 揭竿而起 | 211 |
| 挤挤插插      | 198 | 孑然一身 | 211 |
| 济济一堂      | 198 | 节哀顺变 | 212 |
| 计日程功      | 199 | 桀骜不驯 | 213 |
| 记忆犹新      | 199 | 竭泽而渔 | 214 |
| 既往不咎      | 200 | 戒骄戒躁 | 214 |
| 继往开来      | 200 | 今夕何夕 | 215 |
| 家长里短      | 201 | 金榜题名 | 215 |
| 家喻户晓      | 201 | 金碧辉煌 | 216 |
| 戛然而止      | 202 | 金刚怒目 | 216 |
| 驾轻就熟      | 203 | 筋疲力尽 | 217 |
| 艰难困苦      | 203 | 紧锣密鼓 | 217 |
| 坚忍不拔      | 204 | 锦绣江山 | 218 |
| 坚如磐石      | 204 | 尽如人意 | 218 |
| 兼收并蓄      | 205 | 噤若寒蝉 | 219 |
| 缄口不言      | 205 | 经久不衰 | 219 |

|      |     |           |     |
|------|-----|-----------|-----|
| 泾渭分明 | 220 | 九州四海      | 226 |
| 惊心动魄 | 220 | 酒过三巡      | 226 |
| 精兵简政 | 221 | 咎由自取      | 227 |
| 精疲力竭 | 221 | 鞠躬尽瘁,死而后已 | 227 |
| 精神焕发 | 222 | 举一反三      | 228 |
| 井然有序 | 222 | 举世震惊      | 228 |
| 九霄云外 | 223 | 举手投足      | 229 |
| 久负盛名 | 223 | 据为己有      | 229 |
| 久经沙场 | 224 | 聚精会神      | 230 |
| 警钟长鸣 | 224 | 卷帙浩繁      | 230 |
| 静候佳音 | 225 | 君子不器      | 231 |
| 鸠占鹊巢 | 225 |           |     |

## K

|      |     |      |     |
|------|-----|------|-----|
| 开源节流 | 232 | 空空如也 | 236 |
| 开宗明义 | 232 | 口干舌燥 | 236 |
| 慷慨解囊 | 233 | 口焦舌燥 | 237 |
| 可见一斑 | 233 | 枯燥无味 | 237 |
| 可想而知 | 234 | 苦心孤诣 | 238 |
| 克敌制胜 | 234 | 脍炙人口 | 238 |
| 恪尽职守 | 235 | 宽宏大度 | 239 |
| 溘然长逝 | 235 |      |     |

## L

|      |     |      |     |
|------|-----|------|-----|
| 拉马坠镫 | 241 | 劳燕分飞 | 243 |
| 烂醉如泥 | 241 | 老奸巨猾 | 244 |
| 滥竽充数 | 242 | 老生常谈 | 244 |
| 劳而无功 | 243 | 乐此不疲 | 245 |

|      |     |      |     |
|------|-----|------|-----|
| 雷霆万钧 | 246 | 鳞次栉比 | 256 |
| 哩哩啦啦 | 246 | 伶牙俐齿 | 257 |
| 礼尚往来 | 246 | 玲珑剔透 | 258 |
| 礼仪之邦 | 247 | 凌霜傲雪 | 258 |
| 李代桃僵 | 247 | 另眼相看 | 259 |
| 厉兵秣马 | 248 | 流芳百世 | 259 |
| 厉行节约 | 249 | 流连忘返 | 259 |
| 励精图治 | 249 | 流言蜚语 | 260 |
| 立竿见影 | 250 | 炉火纯青 | 261 |
| 立功赎罪 | 251 | 戮力同心 | 261 |
| 利欲熏心 | 251 | 屡见不鲜 | 262 |
| 连篇累牍 | 251 | 屡教不改 | 262 |
| 良辰美景 | 252 | 绿草成茵 | 263 |
| 良莠不齐 | 252 | 绿草如茵 | 263 |
| 两全其美 | 253 | 乱花迷眼 | 264 |
| 寥寥无几 | 254 | 乱七八糟 | 264 |
| 寥若晨星 | 254 | 略胜一筹 | 265 |
| 了如指掌 | 255 | 锣鼓喧天 | 265 |
| 淋漓尽致 | 255 | 络绎不绝 | 266 |
| 琳琅满目 | 256 | 落荒而逃 | 266 |

## M

|      |     |         |     |
|------|-----|---------|-----|
| 麻木不仁 | 268 | 冒天下之大不韪 | 272 |
| 满腹经纶 | 268 | 貌合神离    | 273 |
| 满满当当 | 269 | 没精打采    | 273 |
| 满目疮痍 | 269 | 没着没落    | 274 |
| 漫不经心 | 270 | 媒妁之言    | 274 |
| 慢条斯理 | 270 | 每况愈下    | 275 |
| 忙忙碌碌 | 271 | 美轮美奂    | 275 |
| 毛骨悚然 | 271 | 梦寐以求    | 276 |